पूर्व अधिष्ठाता,
कला संकाय,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४

डॉ. वसंत केशव मोरे,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजर्षि छत्रपति शाहू,
महाविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००१
तथा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४

= प्र मा ण प त्र =

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. सादिक बापूलाल देसाई ने शिवाजी विश्वविद्यालय की "एम्. फिल्. [हिन्दी]" उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध "प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विधवा समस्याएँ-एक अनुशीलन।" मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्री. सादिक बापूलाल देसाई के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

[डॉ. वसंत केशव मोरे]
शोध निर्देशक

कोल्हापुर
दिनांक : ५ मई १९९२

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	१ से ५
प्रथम अध्याय- प्रेमचंद: व्यक्तित्व और कृतित्व।	६ से १५
द्वितीय अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय।	१६ से २९
तृतीय अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासो में विविध समस्याएँ।	३० से ७६
चतुर्थ अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विधवा समस्याएँ।	७७ से १०८
उपसंहार।	१०९ से ११७
संदर्भग्रंथ सूची।	११८ से १२०

= प्राक्कथन =

'हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास मनोरंजन प्रधान था। प्रेमचंद पूर्व के लेखकों ने तिलस्मी ऐयारी उपन्यास साहित्य की रचना की। उसके बाद उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंदजी का आगमन हुआ। बाद में उपन्यास सम्राट हो गये। उन्होंने सबसे प्रथम यह प्रयास किया कि उपन्यास मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि हमारे सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन की अभिव्यक्ति है। उन्होंने सामाजिक उपन्यास लिखे।

मेरे कॉलेज जीवन में मुझे प्रेमचंदजी की अमर कृति 'गोदान' पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तभी से मेरे मन में उनके प्रति एक सादर आकर्षण पैदा हो गया था। जब मुझे लघुशोध-प्रबंध का विषय चुनने का मौका मिला तो अनायास ही मेरे सामने 'प्रेमचंदजी' साकार हो उठे। जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव श्रेध्देय गुरुवर्य डॉ. मोरे जी के सम्मुख रखा तो आपने हामी भर दी तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत भी किया। अनुसंधान का विषय है- 'प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विधवा समस्याएँ- एक अनुशीलन।' अब तक प्रेमचंद जी पर पर्याप्त अनुसंधान हो चुका है। विधवा समस्या को लेकर स्वतंत्र रूप से अब तक अनुसंधान नहीं हुआ। इसलिए मैंने अपने अनुसंधान के लिए उपर्युक्त विषय चुना है।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सम्मुख निम्नांकित प्रश्न थे।

१] क्या प्रेमचंद के सभी उपन्यास समस्या प्रधान हैं ?

२] प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किन समस्याओं का चित्रण किया हैं ?

३] क्या प्रेमचंद ने विधवा समस्या का चित्रण अपने सभी उपन्यासों में किया हैं ?

४] विधवाओं की कौन कौनसी समस्याओं पर प्रेमचंद ने प्रकाश डाला हैं ?

५] क्या प्रेमचंद ने विधवा समस्या के समाधान भी सुझाये हैं ?

इन प्रश्नों को सामने रखकर मैंने प्रेमचंद जी के उपन्यासों में चित्रित विधवा समस्याओं का अनुशीलन करने का प्रयास किया है।

अत: इस समग्र विवेचन को मैनें निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत किया है-

प्रथम अध्याय-प्रेमचंद व्यक्तित्व और कृतित्व।

इसमें प्रेमचंद के व्यक्तित्व और कृतित्व का सामान्य परिचय दिया है। इससे लेखक की सभी कृतियों का और लेखक का सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है।

द्वितीय अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय।

इस अध्याय में प्रेमचंद के सभी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है, जिससे पाठकों को प्रेमचंद जी के महान साहित्यिक कार्य का परिचय संक्षिप्त रूप से प्राप्त हो जाता है।

तृतीय अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विविध समस्याएँ।

प्रस्तुत अध्याय में मैंने प्रेमचंद जी के उपन्यासों में विधवा समस्या के अलावा जिन प्रमुख समस्याओं का चित्रण हुआ है, उनका विवेचन किया है। इनमें से प्रमुख समस्याएँ निम्नांकितहैं-

१] वेश्या समस्या।
२] विवाह समस्या।
३] पारिवारिक समस्या।
४] शैक्षिक समस्या।
५] अछूत समस्या।
६] रियासतों की समस्या।
७] साम्प्रदायिक समस्या।
८] औद्योगिक समस्या।
९] स्वाधीनता पाने की समस्या।
१०] किसान समस्या।

चतुर्थ अध्याय- प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित विधवा समस्याएँ।

यही अध्याय मेरे लघु शोध-प्रबंध का हृदय-स्थल है। प्रेमचंद जी ने विधवाओं की विविध समस्याओं का अपने उपन्यासों मे चित्रण किया है। अनुसंधान करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में रखे गये हैं और अंत में सहायक ग्रंथों की सूची भी जोड दी है।

इस लघु शोध-प्रबन्ध को संपन्न करने में श्रध्देय गुरुदेव डॉ. वसंत केशव मोरे जी का अध्ययन संपन्न पथ प्रदर्शन बहुत बडा सहायक साबित हुआ है। अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी श्रध्देय डॉ. मोरे जी ने एक सफल निर्देशक के रूप में मुझ पर जो ऋण किये हैं उससे उऋण हो पाना असंभव है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के गुण आपके हैं और त्रुटियाँ मेरी हैं।

अध्यापक का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए इस संशोधन कार्य में अधिक समय देना मरे लिए नामुमकीन था लेकिन दूध-साखर कला व विज्ञान महाविद्यालय बिद्री के प्राचार्य श्रध्देय शारद कणबरकर . का स्नेह भरा योगदान न मिलता तो मैं प्रस्तुत कार्य में सफल हो न पाता।

इस कार्य में मुझे निरंतर प्रेरित करने वाले और अपनी ओर से सक्रिय योगदान . देने वाले डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड, डॉ. के. पी. शाहा, प्रा. एम. के सिवले, प्रा. रजनी भागवत, प्रा. जी. एस. हिरेमठ, प्रा. डी. के. गोटूरी, कु. लतिफा देसाई आदि का मैं आभारी हूँ।

के. बी. पी महाविद्यालय इस्लामपुर के डॉ. चव्हान इन्होंने भी मेरे इस कार्य को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के ग्रंथपाल, श्री. जाधव, राजर्षि छत्रपति शाहू महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल श्री. सावंत एस. पी. तथा दूध-साखर महाविद्यालय, बिद्री की ग्रंथपाल कु. पद्मा पाटील का भी मैं आभारी

हूँ। दूध-साखर महाविद्यालय का विद्यार्थी श्री. पाटील अंकुश रामचंद का भी मैं आभारी हूँ।

देसाईज टाईपरायटिंग इन्स्टिटयूट, शिरोली और स्मिता प्रिंटर्स अ इन्होंने भी मुझे जो सहकार्य किया उससे उऋण हो पाना असंभव है। माता-पिता की आशीर्वादमयी प्रेरणा के कारण ही मुझे इस कार्य में सफलता मिली। भविष्य में भी इन सब लोगों से आशीर्वादमयी सहयोग की कामना करते हुए सुधी विव्दानों के सामने मैं अपना लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करता हूँ।

भवदीय,

[श्री. देसाई एस. बी.]
अधिव्याख्याता हिंदी विभाग,
दूध-साखर महाविद्यालय, बिद्री
जि. कोल्हापुर

कोल्हापुर

दिनांक :